Appendix

परिशिष्ट - १

डा. शंकर शेष के निधनपर बंबई दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कार्यक्रम में श्री. प्रकाश पाण्डे "रसिक" द्वारा पढ़ी गयी कविता :-

कला साहित्य का संगम था
ओ जो शेष नहीं, वो डॉ. शंकर शेष था ।।

विधि का विधान भी आज पलट गया
अमावास की रात में एक तारा चमक गया
हाय । दीपावली क्या इसे कहते हैं
दीप तो जल गये पर दिल बुझ बुझ गया
ओ । नींद के मतवाले जरा उठ के देख
आंखो से आंसुओं का जनाजा निकल गया
महफिलों के दामन में ग़म की स्याही है
हर तरफ, हर जगह, तनहा, रुसवाई है
आँखें खुश्क, चेहरे उदास हैं, खूब वफा निभाई है
नेक दिल, रहम दिल, दिल उसका एक मंदिर था
वो जो अब शेष नहीं .....

उम्मीदें सब दफन हो गई
कहानियाँ सब कफन हो गई
निशानियाँ एक यकीं हो गई
" दूरियाँ " शून्य में खो गई
उसकी लेखनी में करिश्मा था
वो जो अब शेष नहीं .....

साजे दिल अब सदा नहीं देता
कोई नगमा मजा नहीं देता
सुर किन कलाओं में खो कर रह गये
साज गमगीं है, आवाज नहीं देता
त्याग मूर्ति और कलाप्रेमी किस दिशा को चला गया
यश फैलाकर जनजीवन में अनमोल जीवन चला गया
जो तुझमें था किसी में होगा नहीं
खुदा भी तंग दिल है दोबारा भेजेगा नहीं
सबकी आँखों में जो अपना था
वो जो अब शेष नहीं वो डा. शंकर शेष था।

.. प्रकाश चन्द्र पाण्डे "रसिक"